संत. अलोशियस महाविद्यालय (स्वायत्त), मंगलूरु

प्रेरणा २०१९

Art by :Prajith Rai, III B.Sc.(CMB)

सम्पादक समिति

हिंदी अध्यापक तथा संघ के सचिव

अध्यापक : मंजुला डी, महबूबअलि अ. नदाफ, डॉ. मुकुन्द प्रभु, सुश्री रोयसी रेखा ब्राग्स, संध्या यू सिर्सीकर।

सम्पादक समिति : मेलिशा स्विडल डिसोजा, फ़र्ज़ीन शेख।

संघ के सचिव : मुहम्मद मुनीस, टिन्कु कुवर।

संपादकीय

प्रेरणा वार्षिक पत्रिका का १७वाँ अंक आपको समर्पित करते हुए बडी खुशी हो रही है । यह पत्रिका वर्ष २००२ से हर साल प्रकाशित हो रही है । पत्रिका का उद्देश छात्र–छात्राओं में सृजन–प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना है । प्रेरणा पत्रिका हिंदी के प्रचार–प्रसार का एक माध्यम है । यह पत्रिका छात्रों में छिपि ज्ञान–शक्ति को उजागर करने का प्रयास करती है ।

लेखन मनुष्य को चिंतित बनाने के बजाय चिंताओं से मुक्ति दिलाता है । इसीलिए जो मनुष्य जितना लिखता है, उसे उतना ही चैन मिलता है । लिखने से उसके मन का भार बढता नहीं घटता है । आज के युवा मानस में कई उलझने हैं । उसके सामने कई मार्ग हैं । इस संसार में आने के बाद समाज हमें जीवन यापन के लिए जितनी सुविधाएँ उपलब्ध कराता है उतने ही बंधन भी लगाता है । इन बंधनों से मुक्ति पाने का एक रास्ता है लेखनी के सहारे आगे बढना ।

समाज उसी रचना को स्वीकार करता है जिसमें यथार्थ के साथ कल्पना की गंध हो । प्रस्तुत पत्रिका में छात्रों का अनुभव यथार्थ है, उनकी आशा–आकांक्षाएँ उनके सपनें हैं । समाज में हम कई बार दिखावे का जीवन जीते हैं । जैसे निजी जीवन में भीतर पीडा होते हुए भी चेहरे पर मुस्कान ले आते हैं । इन लेखनों में भी यही भाव यथार्थ और कल्पना के रूप में उभर कर आए हैं। सुधी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि यथार्थ और कल्पना के मिश्रण का आदर्श रूप ग्रहण करें ।

एक हाथ से कभी ताली नहीं बजती उसी तरह इस प्रेरणा पत्रिका के प्रकाशन में अनेकों का सहयोग मिला है । उनके प्रती आभार समर्पण करना मेरा कर्तव्य है । प्रेरणा पत्रिका के लिए विभिन्न विषयों पर लेख लिखकर पत्रिका की गरिमा बनाए रखनेवाले सभी नवलेखकों को साधुवाद देता हूँ । पत्रिका के प्रकाशन में मदद करने वाली संपादक समिति को धन्यवाद देता हूँ । छात्रों के लेखन को सुधार कर प्रकाशन के लिए सहयोग के साथ शुभ आशिर्वाद देनेवाले प्राचार्य, विभागाध्यक्ष तथा तीनों सहकर्मी अध्यापिकाओं को धन्यवाद देता हूँ ।

धन्यवाद ।

मंगलोर
जनवरी २०१९

श्री महबूबअलि अ. नदाफ

Principal's Message

In a modern digital world with the young generation spending their valuable time with mobiles, has really lost interest in reading as well as writing. We, at St Aloysius College, attempt to mould young minds through various skill-based activities. 'Prerana' is one among them. 'Prerana', a magazine brought out by the Department of Hindi on the theme 'Ek Kadam Apni Pehechan ki Aur" which means "One Step Towards Your Identity." It represents the voice and aspirations of the Hindi students of the college campus.

Youth need to enhance their writing skills through mazagines. Along with the enhancement of writing skills, interest in reading has to be promoted. Many of our students have no time even to glance through a daily newspaper. Reading and writing habits to be cultivated and interest must be generated through such magazines. Creativity and imagination are required to produce good literature. One has to enjoy reading and then put his ideas into creative writing. It is a medium through which the students can communicate their deeper desires and longings.

We, at St Aloysius College always encourage students to go beyond academics. There are so many students in our College with good creative writing abilities. 'Prerana' is a magazine which encourages students to showcase their writing abilities.

I congratulate the students and the faculty of Hindi for their creative and lively presentation.

Rev. Fr Dr Praveen Martis SJ
Principal, St Aloysius College (Autonomous)

विभागाध्यक्ष का संदेश

समयानुसार समाज एवं सामाजिक मूल्य बदलते हैं । उसीके मुताबिक भाषा एवं साहित्य में परिवर्तन आता है । साहित्य समाज का दर्पण है । आम जनता की मनोवृत्तियों का आकलन साहित्य में होता है । अपनी अभिव्यक्तियों को बुलंद करने के लिए साहित्य एक सशक्त माध्यम है । आज की युवा पीढ़ी के मनोमस्तिष्क में अनेक शंकाएँ, उमीदे, विचारों का उतलपुतल चलता है । उसे निर्लिप्त भाव से उजागर करने से उनका एवं पाठकों के ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है । इस उद्देश्य से हमारे कॉलेज का हिन्दी विभाग हिन्दी संघ के नेतृत्व में 'प्रेरणा' अंतर महाविद्यालयी प्रतियोगिताएँ एवं 'प्रेरणा पत्रिका' का विमोचन हर साल करते आया है । आधुनिक युवा पीढ़ी में चुपी सुप्त प्रतिभा का उजागर करने के लिए यह एक सुअवसर है । यहाँ विद्यार्थियों का सर्वतोमुख उन्नयन की सँभावनाएँ हैं । इस पत्रिका में हमारे महाविद्यालय के अलग अलग निकाय के विद्यार्थियों का चिंतन मंथन आकलित है । किसी ने कविता द्वारा और किसी ने कहानी द्वारा अपनी या समाज की आपबीतियों का उजागर किया है । इनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करना हम सब का कर्तव्य है । अपने आलेखों के द्वारा इस पत्रिका को संपन्न बनाने वाले सभी छात्र–छात्राओं को विभागाध्यक्ष के नाते मैं धन्यवाद समर्पित करता हूँ ।

इस पत्रिका को सुंदर ढंग में प्रकाशित करने के लिए विभाग के प्राध्यापक श्री मेहबूबअली नदाफ़ जी एवं संपादक मंडली को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ । संघ की अध्यक्षा श्रीमती संध्या सिर्सीकर, उपाध्यक्षा कु. रोयसी रेखा ब्रागस, एवं सचित मोहम्मद मुनीज़ को भी मैं हार्दिक धन्यवाद समर्पण करता हूँ ।

हम सब के कार्यों को प्रोत्साहित करने वाले प्राचार्य हमारे उत्साह के मूल प्रेरणा श्रोत हैं । विभाव एवं हिन्दी विद्यार्थियों की तरफ से प्राचार्य रे. डॉ. प्रवीण मार्टिस जी को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ ।

डॉ. मुकुन्द प्रभु
विभागाध्यक्ष

अध्यक्षा का संदेश

हिन्दी हैं हम वतन से हिन्दुस्तान हमारा

विश्व के सबसे उन्नत भाषाओं में हिन्दी भाषा सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है । दुनिया की एकमात्र हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो कि सबसे अधिक और तेजी से प्रसारित होनेवाली भाषाओं में एक है । भाषा समृद्धि को ध्यान में रखते हुए संत अलोशियस महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा 'प्रेरणा' पत्रिका हर साल जनमानस अपना छोड़ रही है ।

इस पत्रिका में आपकी अनोखी सृजनात्मक रचना द्वारा हमारे कॉलेज के विद्यार्थी अपने साहित्यिक योगदान देने में सफल बने हैं । यह पत्रिका एक दर्पण है । सालों में हिन्दी साहित्य को पत्र–पत्रिकाओं में सहारा गया है । हमारे 'प्रेरणा' पत्रिका का उद्देश उभरते प्रतिभान्वित छात्राओं को प्रोत्साहन देना है । हमारे हिन्दी विभाग के छात्र–छात्राएँ अपने प्रेरणादायी लेख द्वारा साहित्य को जोड़ने में हमेशा तत्पर रहते हैं । यह छोटे–मोटे साहिती साहित्य सागर की मोतियाँ हैं । मुझे उम्मीद है कि आप सभी पाठक इस पत्रिका को पढ़कर हमारे इन साहितियों को ज़रूर प्रोत्साहन देंगे जिससे उन्हें आगे की साहित्यिक सृजन में बढ़वा मिलेगा । मुझे इस पत्रिका के संपादकीय काम में सहयोग व प्रोत्साहन देने के लिए हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. मुकुन्द प्रभु, प्राध्यापक महबूबअलि अ नदाफ, प्राध्यापिका रोयसी ब्राग्स और मंजुला मेडम का मैं आभार मानती हूँ ।

संध्या यू सिर्सीकर

हिन्दी संघ की अध्यक्षा

उपाध्यक्षा का संदेश

"हिन्दी मात्र भाषा नहीं भावों की अभिव्यक्ति है,
यह विविधता में एकता की आश्वस्ति है ।"

संत अलोशियस कॉलेज के हिन्दी विभाग में शामिल होकर तीन साल हुए । मैं अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली मानती हूँ कि जो मुझे इस कॉलेज में पढ़ने और पढ़ाने का सुअवसर मिला है । साथ ही साथ मुझे यह जानकर बहुत ही खुशी हो रही है कि हर साल हिन्दी पढ़नेवालों की संख्या बढ़ रही है । हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है, जो अनजान लोगों में भी दोस्ताना बढ़ाती है ।

'प्रेरणा पर्व' हिन्दी विभाग का विशेष अंग है। विद्यार्थी सब बड़े उत्साह के साथ प्रेरणा पर्व की सफलता के लिए मेहनत कर रहे हैं । इन सबके मेहनत का फल जरूर मिले, यही मेरी मनोकामना है ।

धन्यवाद ।

सुश्री रोयसी रेखा ब्राग्स

हिन्दी संघ की उपाध्यक्षा

अध्यापिका का संदेश

"सपने देखो, सपने विचारों में बदलते है और विचार क्रिया में ।"

संत अलोशियस कॉलेज के हिन्दी विभाग में अध्यापिका बनने का मौका मुझे मिला है, इसलिए मैं अपने आपको भाग्यशाली मानती हूँ । हमारे इस संस्था में हिन्दी छात्रों की संख्या हर साल बढती जा रही है, यह खुशी का विचार हैं । हिन्दी विभाग की ओर से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, विद्यार्थी उन प्रतियोगिताओं में उत्सुक होकर भाग लेते हैं ।

प्रेरणा अंतर कॉलेज उत्सव है । इसमें अनेक महाविद्यालय के छात्र–छात्राएँ भाग लेकर अपनी प्रतिभा का परिचय कराते हैं। प्रेरणा पत्रिका इस उत्सव का एक अंग है । यह पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा को अपनी लेखनी के द्वारा दर्शाने के लिए सुअवर प्रदान करती है । हिन्दी विभाग छात्रों की कला को सकारात्मक रूप देने के लिए निरंतर परिश्रम कर रहा है । यह परिश्रम सफलता हासिल करे यही मेरी कामना हैं ।

धन्यवाद ।

मंजुला डी.
हिन्दी अध्यापिका

सचिव का संदेश

जिम्मेदारी का मतलब है जीवन में आने वाली किसी भी स्थिति का सामना करने में सक्षम होना ।

आदरणीय प्राचार्य और गुरुजनों को मेरा प्रणाम । वर्ष २०१८–१९ के हिन्दी संघ केसचिव बनने का सौभाग्य मुझे मिला । इसलिए मैं सबका आभारी हूँ ।

मैं बी.बी.ए. के प्रथम वर्ष से ही हिन्दी संघ का सदस्य रहा हूँ । हिन्दी संघ के हर कार्यक्रमों में मैं भाग लेते आया हूँ ।

हिन्दी संघ में हमारे कॉलेज के सभी विभाग के छात्र–छात्राएँ भाग लेते हैं । अगर हम हिन्दी सीखेंगे तो भारत के किसी भी कोने के शहर के लोगों से हम बात–चीत कर सकते हैं । हमारे देश राज्य सरकारी हिन्दी भाषा को ही स्वीकार करते हैं । प्रेरणा–२०१९ ऐसा उत्सव है जो विद्यार्थियों की कला दर्शाने को एक मौका देता है । इस शुभ अवसर पर मैं आप सब को एक संदेश देना चाहता हूँ ।

'अच्छे लोगों की इज्जत कभी कम नहीं होती ।
सोने के सौ तुकड़े करो फिर भी कीमत कम नहीं होती ।
भूल होना प्रकृति है ।
मान लेना संस्कृति है, सुधार लेना प्रगति है ।
ये रासते ले ही जाएँगे, मंजिल तक तू हौसला रख ।
कभी सुना है कि अंधेरे ने सुबह ना होने दी हो...!'

मुहम्मद मुनीस
सचिव, हिन्दी संघ

मेरे सपनों का भारत

– पूर्णिमा भोगावी
प्रथम बी.एस.सी.

मेरे सपनों का भारत,
जहाँ राजा करेगा प्रजा का हित ।
मिले जहा सभी को राहत,
कोई न रहे असुविधाओं से पीड़ित ।
गुना रहित बन जाए हर रात,
भारत बने सुख शांति का प्रतीक ।

समृद्धी की कोई कमी नहीं यहाँ,
फिर क्यूँ है दिलों में गमी यहाँ ?
विकास प्राप्त करने की आशा है जहाँ,
जिद और एकता दृढ़ क्यूँ नहीं यहाँ ?
प्रगति की जरूरत है जहाँ,
प्रकृति को प्रामुख्यता देना जरूरी है हर जगह ।

बेवजह दिल में एक बात आई,
क्यूँ न बन्द कर दे हर लड़ाई ।
हर जगह हो हरियाली छाई,
और सिर्फ अच्छे विचारों की परछाई ।
मिट जाए हर क्षेत्र की बुराई,
लोग अपने कर्तव्यों में लाए गहराई ।
सभी को यह समझ आए कि जरूरी नहीं है कमाई,
भगवान वहीं है जो करे सबकी भलाई ।

क्यूँ न कुछ कदम रखूँ,
कोशिश कर कुछ बदल सकूँ,
मित्रों को यह ज़ात कराऊँ,
क्यूँ न एक सशक्त सेना बनाऊँ,
भारत को और ज्यादा ऊपर उठाऊँ ।

दोस्ती

– रुवीना ग्लान डिकुन्हा
प्रथम बी.सी.ए.

हे मेरे साथी, बचपन की है यह दोस्ती ।
जब करती बात, मुझे तू हँसाती ।
बनके मैं तुम्हारा साथी,
झगड़ा करके बने रहे थे हम,
झगड़ा करके ही खोयेंगे हमारे सारे गम ।

मेरी नजर में इश्क!

– अथीद आबीद मन्ना
द्वितीय बि.कोम

मानव जीवन पशु जीवन से अलग है । बहुत से चीज़ों पर जब हम विचार करे, तो उनकी कई सारे वजह दिखाई पड़ते हैं । उनमें से एक वहज है, 'प्यार' की भावना । प्रेम की भावना ही एक बड़ी वजह है जो मनुष्य को जानवर से अलग करती है । पशु की तरह मानव 'क्रूरी', 'हिंसात्मक' ना होते हुए 'सहनशीलता' और आपस में 'प्रेम' की भावना का प्रचार करता है । पशु प्रेम में एक ही साथी के साथ प्यार करना या फिर साथ बिताना, यह कानून नहीं है । यह कानून सिर्फ मनुष्य प्रेम में ही दिखाई पड़ता है । इसलिए, यह सारे बातों पर प्रकाश डाले, तो यह बात पता चलती है कि मानव जीवन पशु जीवन से कितना अलग है और इस पर प्रेम एक महत्वपूर्ण कार्य निभाता है।

मनुष्य प्यार में पहला प्यार का एहसास :

मनुष्य के पहले प्यार में लगता है कि अपने साथी के प्यार में खो जाए । उसकी बारीशें भिगाए हमें । उसकी हवाएँ बहाए हमें । पाँवों तले हमारी ज़मीन चल पड़ी, ऐसा तो कभी, पहले हुआ ही नहीं । हमारा हृदय हमें इश्क मुबारक कहने लगता है । हमें ऐसा लगता है कि पहले कभी हमने ना सुनी जो वो ऐसी बातें कर रही है । हर तरफ हमें वहीं नज़र आने लगती है और हमारे प्यार के रास्ते के अलावा हमारे पास कोई अन्य रास्ता नहीं होता है ।

प्यार का महत्व

प्यार हमारे जीवन में बहुत आवश्यक होता है । हमारे साँसों को जीने का इशारा मिल जाता है। प्यार में डूबकर किनारा मिल जाता है । प्यार के साथ रहकर हमें शैतान को दूर रखकर भगवान का सहारा मिल जाता है । प्यार एक बेरहम इन्सान को एक अच्छा इनसान बना देता है । इन्सान में रहम भर देता है । प्यार हमें आराम दे देता है । हमारे हर दर्द को मिटा देता है । प्यार के एक अनोखे कारण से मनुष्य, मनुष्य बनकर रहता है ।

निष्कर्ष:

मनुष्य के लिए जैसे खाना–पानी आवश्यक है वैसे ही प्यार भी आवश्यक होता है । प्यार के बिना मनुष्य का जीवन में कोई मतलब नहीं होता । एक अंग्रेज़ी साहित्यकार ने कहा था कि 'Love makes life beautiful' । प्यार जिन्दगी को खूबसूरत बना देता है । हमें कभी भी प्यार किया तो डरना नहीं चाहिए क्योंकि प्यार कोई चोरी नहीं होता । प्यार जितना भी हो, हमें यह देखना चाहिए कि प्यार हम पर कब्ज़ा न करलें । कभी–कभी प्यार एक जिद बन जाती है । हमें प्यार को ऐसा होने से रोकना चाहिए और एक हद तक ही प्यार को सीमित रखना चाहिए ।

– आयिशा रिधा

द्वितीय बी.एस.सी.

देश, समाज और परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिए महिला सशक्तीकरण बेहद जरूरी है । महिलाओं को स्वच्छ और उपयुक्त पर्यावरण की जरूरत है जिससे कि वो हर क्षेत्र में अपना खुद का फैसला ले सकें चाहे वो स्वयं देश, परिवार या समाज किसी के लिए भी हो । देश को पूरी तरह से विकसित बनाने तथा विकास के लक्ष्य को पाने के लिए एक जरूरी हथियार के रूप में है महिला सशक्तीकरण ।

भारतीय संविधान के प्रावधान के अनुसार पुरुषों की तरह सभी क्षेत्रों में महिलाओं को बराबर अधिकार देने के लिए कानूनी स्थिति है । भारत में बच्चों और महिलाओं के उचित विकास के लिए इस क्षेत्र में महिला और बाल विकास विभाग अच्छे से कार्य कर रहा है । प्राचीन समय से ही भारत में महिलाएँ अग्रणी भूमिका में थी हालाँकि उन्हें हर क्षेत्र में हस्तक्षेप की इजाज़त नहीं थी ।

ग्लोबल वार्मिंग और मौसम का बदलाव

ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायू परिवर्तन का विषय शिक्षित समाज पर्यावरणविदों, वैज्ञानिकों, मीडिया कर्मियों और कतिपय जनप्रतिनिधियों के बीच धीरे–धीरे चर्चा का मुद्दा बन रहा है । इस विषय की चर्चाओं में जलवायु परिवर्तन की सँभावनाओं के मध्य नज़र उसके मानव सभ्यता एवं समस्त जीवधारियों पर सँभावित प्रभाव की भी चर्चा होने लगी है । पर्यावरणविदों एवं कतिपय वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए तो अनेक जीवधारियों के जीवन पर असर पड़ेगा और कुछ जीव जन्तुओं का नामोनिशान मिट जाएगा ।

वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा बढ़ने को ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायू परिवर्तन का कारण माना जाता है । वातावरण की मुख्य ग्रीन हाउस गैसें पानी की भाप, कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन नाइट्रस ऑक्साइड और ओजोन मुख्य हैं । इन गैसों द्वारा सूरज से धरती पर आने वाले रेडियेशन की कुछ मात्रा सोखने के कारण धरती के वातावरण को कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में लगातार वृद्धि हो रही है ।

मोहम्मद हफ़ीज़

प्रथम बी.बी.ए.

समुन्दर

– नागराज हेच.वी.
द्वितीय बी.एस.सी.

हमारी मुलाकात होके बहुत दिन हुए,
वो क्या है ना अब जीना थोड़ा,
मुश्किल हो गया है ।
डरो मत दिल में कुछ बात है,
उन्हें उतारना है ।
ये दिल मेरा थोड़ा हल्का करना है ।
आप हमारी बहुत अच्छी तरह
सुनते हैं ।
बिन बोले बात भी समझ लेते हैं ।
और लगता है आप भी हमारा इंतज़ार
कर रहे थे ।
लो अब आ ही गया हूँ,
बहुत दिन के बाद आपसे मिलने ।
चलो साथ में बैठ के चार बात
कर लेते हैं –

अंधेरी–सी जिन्दगी थी मेरी,
आप रोशनी बनकर आये ।
भटक गया था मैं कहीं,
आप मुझे एक रास्ता दिखाये ।
जिन्दगी नहीं जीना था मुझे,
लेकिन आप जीने की वजह बन गए ।
बहुत शर्मीला था मैं,
आप मुझे एक लेखक में बदल दिए ।
कोशिश बहुत किया आपको हासिल करने,
पर मेरी हर कोशिश बेकार निकल गयी
पता चला, आप मेरे जिन्दगी में
सिर्फ मेरे लिखने की वजह बन कर
आये थे ।

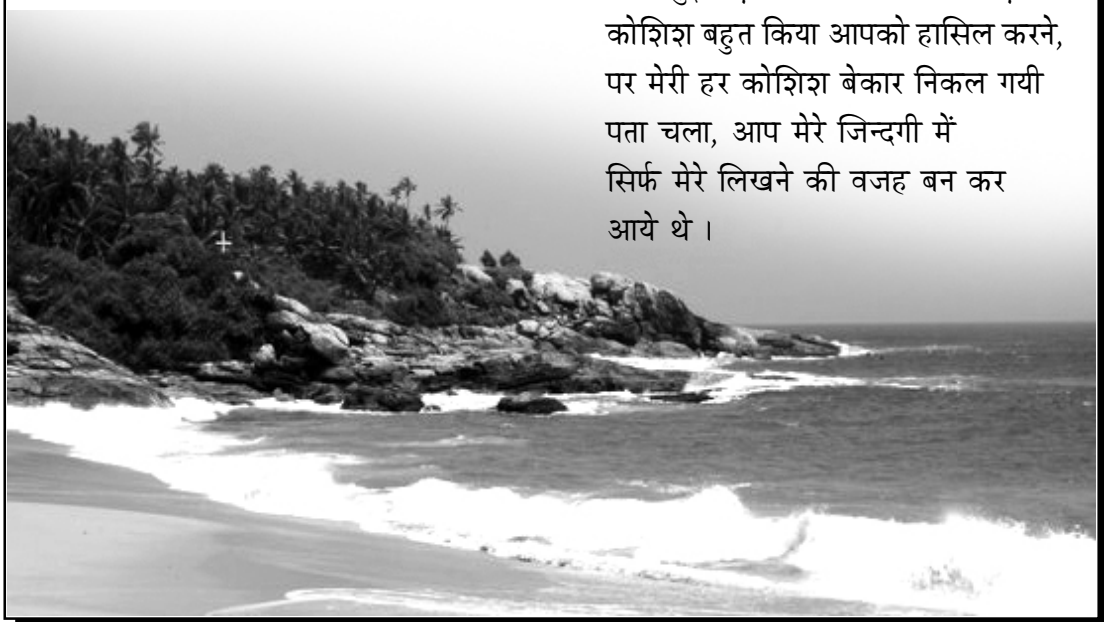

खूबसूरती कहाँ बसती है ?

– लहरी
द्वितीय बी.एस.सी.

सच्छी सूरत मनुष्य के रंगों में बसती नहीं,
बल्कि मनुष्य के गुणों में बसती है ।
खूबसूरती वह चीज़ है जो अनदेखी है,
या समझने के लिए मुश्किल है ।

मनुष्य की सच्छी पहचान रंगों की खूबसूरती से नहीं,
बल्की गुणों से की जाती है ।
खूबसूरती सुंदर चीज़ों की दिखावट से नहीं,
बल्कि मनुष्य की बुद्धि से या पांडित्य से होता है ।

स्नेह या दोस्ती बढ़ाने के लिए,
अच्छे मन की जरूरत है न कि खूबसूरती की ।
फिर भी लोग खूबसूरती चेहरे में ढूँढ़ते हैं ।
सच्छी बातें आँखों में बसती हैं,
पर आँखों को देखना भूल जाते हैं ।

सुन्दरता से प्रसन्न होना आसान है,
पर गुण से प्रसन्न होना उतना आसान नहीं है ।
हमारा चरित्र गुण से दिखाई देता है,
पर चेहरों के रंग से नहीं बनता ।

मित्र

– कृति शेट्टी
प्रथम बी.सी.ए.

कहते हैं मित्र बनाने में वक्त लगता है,
पर जब कोई अपना पागल सा मिलता है,
तो क्या वक्त लगता है ।
अगर कोई ऐसा मिल जाए,
तो उसे पकड लो, जकड लो,
मित्र बनाके रख लो ।
और आप बस खास मित्र, मेरा
पागल बनके रह लो ।

जीवन एक दुकान

– प्रमित लोबो
प्रथम बी.सी.ए.

जीवन एक दुकान जैसा है ।
नहीं पता कौन कब आता है ।
जो भी आए कुछ देके या लेके जाता है ।
पता नहीं दुकान के सामने कभी कभी
बहुत तमाशा लगा रहता है ।

प्यारनामा

– शफ़ीक अह्मद
प्रथम बी.सी.ए.

प्यार ऐसा करो की नाम हो जाए,
वरना नाम ऐसा रखो कि,
नाम लेते ही प्यार हो जाए ।

मोबाइल फ़ोन के फायदे नुक्सान

– मोहम्मद हफ़ीज़

आज के दिन ऐसा शायद ही कोई होगा, जिसके पास मोबाइल फोन ना हो । हर किसी व्यक्ति के पास मोबाइल फोन होना एक आम बात है, क्योंकि मनुष्य इसका आदि हो चुका है । पर हमें मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते–करते यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि मोबाइल फोन के फायदे और नुकसान क्या क्या है । आज की दुनिया में मोबाइल फोन मनुष्यों को एक दूसरे से जुड़ने के तरीके को पूरी तरह से बदल डाला है ।

मोबाइल फोन के ना होने पर आज का मनुष्य एक सेकेंड के लिए भी अपना कार्य पूरा नहीं कर सकता । आज के स्मार्ट फोन से आप कॉल कर सकते हैं, मेसेज भेज सकते हैं, ईमेल पढ़ सकते हैं, कई प्रकार के दस्तावेज को एडिट कर सेव भी कर सकते हैं और साथ ही हम सोच भी नहीं सकते कि एक मोबाइल फोन में हमे क्या–क्या कर सकते हैं ।

सही नज़रिए से देखा जाए तो मोबाइल फोन मनुष्य द्वारा और मनुष्य के लिए एक अभूतपूर्व अविष्कार है ।

किसान

– मोनिका शर्मा
प्रथम बी.एस.सी.

हम वो हैं, जिनका कोई अस्तित्व नहीं, पर
हम वो हैं, जिनके बिना तुम्हारा जीवन भी नहीं ।
कड़ी धूप, तपती ज़मीन पर, हम हल चलाते हैं,
किसे हमारी परवाह है? कभी खाली पेट सो जाते हैं ।
बैलों को अपना दोस्त मानकर, मिट्टी से हम खेलते हैं,
तुम्हारे दुष्कर्मों के कारण, हम प्रकोप झेलते हैं ।
एक बार आकर देख कैसा, हृदय विद्रावक मंजर है,
पसे लग गई हैं, आंते, खेत अभी भी बंजर हैं ।

गुरुकृपा

– पूर्णिमा भोगावी
प्रथम बी.एस.सी.

जैसे तना फूल के पीछे,
जैसे बारिश हरियाली के पीछे,
जैसे सूरज रोहिणी के पीछे,
और चाँद चाँदनी के पीछे,
वैसे ही रहते हैं गुरुगण हमारी सफलता के पीछे ।

पिता की तरह हमारी गलतियों की सज़ा देकर,
सही मार्ग दिखाते हैं ।
माता की तरह नीति पाठ सुनाकर,
हमें एक इनसान बनाते हैं ।
भाई–बहनों की तरह अपने अनुभवों को बाँटकर,
हमें इस विशाल दुनिया से परिचित कराते हैं ।
एक दोस्त की तरह हमारा साथ देकर,
हमारी यात्रा को सफल बनाने में मदद करते हैं ।

उँगली पकड़कर चलना सिखाया हमको,
अपनी नींद देकर पढ़ाया हमको,
अपनी आँसू छिपाकर हँसाया हमको,
कृपया कभी दुःख न देना इनको ।

सही क्या है गलत क्या है,
यह सब पढ़ाते हैं आप ।
झूठ क्या है सच क्या है,
यह सब समझाते हैं आप ।
जब सूझता नहीं है कुछ भी,
राहों को सरल बनाते हैं आप ।
बंद हो जाते हैं जब सारे दरवाज़े,
नया रास्ता दिखाते हैं आप ।
सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं,
जीवन जीना सिखाते हैं आप ।

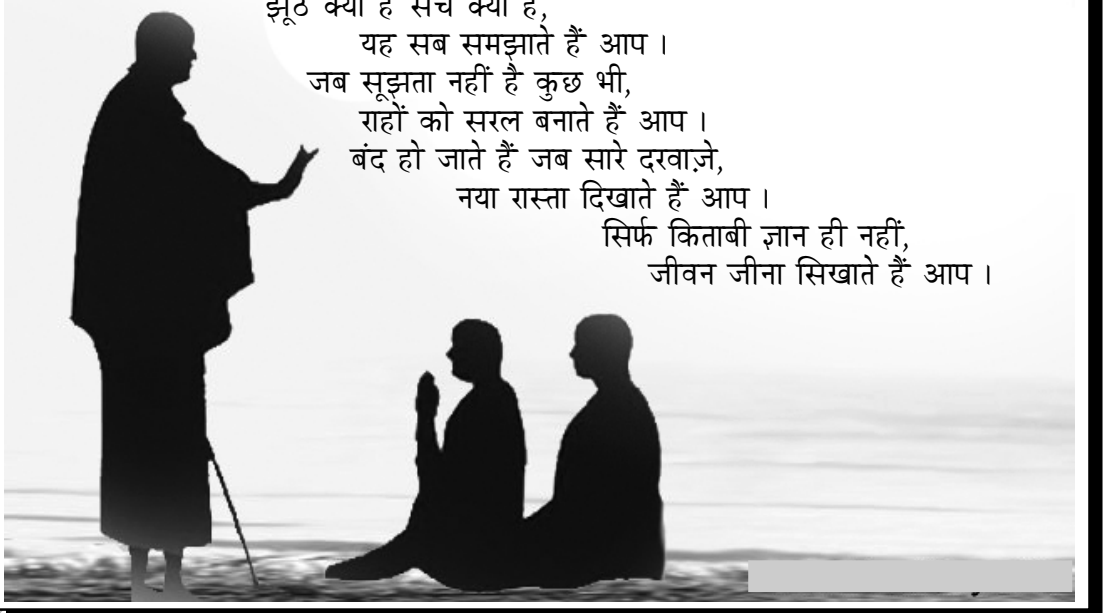

प्यार किया तो डरना क्या?

– काव्या बी नंबियार
द्वितीय बी.एस.सी.

वो १५ साल की थी और बड़ी होकर एक कामयाब सिंगर बनना चाहती थी। मगर सिर्फ एक 'ना' यानी कि इंकार ने उसके सारे सपनों को जला कर रख दिया और उसकी जिन्दगी बदल गई। उसके ऊपर हमला हुआ। वे भी ऐसा–वैसा हमला नहीं बल्कि बो हमला जो जिस्म के साथ–साथ आत्मा भी जला देता है। इस हमले के जख्म से रिसने वाले मवाद तो एक समय के बाद बंद हो जाते हैं मगर इसका दर्द पूरी जिन्दगी रिसता रहता है।

इस हमले में हो सकता है कि शिकार होने वाले की जान चली जाए। अगर वो बच गया तो समाज उसे दोयम दर्जे का नागरिक बना देता है। जिन्दगी बेहद बोझिल व दर्दनाक हो जाती है और वो तिल–तिल कर जीने को मजबूर हो जाता है। हम बात कर रहे हैं एसिड अटैक की।

ज़रा सोचिए कि हमारे चेहरे पर कोई दाग लगा जाता है तो हम उसे जल्द से जल्द साफ़ करने के लिए दौड़ते हैं और तब तक बेचैन रहते हैं जब तक चेहरा पहले जैसा न हो जाए। ऐसे में उन लोगों की बेचैनी का अंदाज़ा लगाया जा सकता है, जो एसिड अटैक का शिकार बनते हैं। आज ऐसी कड़ी में एक ऐसी एसिड अटैक पीड़िता लक्ष्मी की जिन्दगी पर चर्चा करने वाले हैं जिसका चेहरा दरिंदों ने तेजाब से बिगाड़ तो दिया मगर उसके हौसलों का बाल तक बांका नहीं कर सके। जी हाँ, उस पीड़िता का नाम लक्ष्मी है जिसने हमले के बाद से समाज में अपने हक के लिए आवाज़ उठानी शुरु की।

आज लक्ष्मी देश में एसिड अटैक की शिकार लड़कियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन चुकी है। अब अगर बात लक्ष्मी की हो रही हो तो उस शख्स को कैसे भूला जा सकता है जिसने लक्ष्मी के अंदर जीने का जज्बा भरा और उसे सम्मान के एक प्लेटफार्म पर लाकर खड़ा किया। सिर्फ लक्ष्मी के अंदर ही नहीं बल्कि उन तमाम एसिड अटैक पीड़ितओं के अंदर इस युवक ने तो दम भरा जिससे वो अपनी आवाज़ बुलंद कर सके।

इस व्यक्ति ने बुरी दुनिया में निःस्वार्थ और पवित्र प्रेम की एक नई परिभाषा भी गढ़ी। सरकारी नौकरी छोड़कर एसिड अटैक पीड़िताओं के लिए मुहिम चलाने वाले शख्स का नाम आलोक दीक्षित है। तो चलिए आज आपको लक्ष्मी और आलोक की जिन्दगी के उन पहलुओं को रु–ब–रु करवाते हैं जो इन दोनों ने वन इंडिया से खास बातचीत के दौरान शेयर किया।

सूरज तो उस दिन भी रोशनी लेकर निकला था मगर लक्ष्मी की जिन्दगी में अंधेरा कर गया। उस दर्दनाक सुबह की भयावह कहानी बताते हुए लक्ष्मी काँप गई। लक्ष्मी ने बताया कि बात

२००५ की है जब उसकी उम्र १५ साल थी और वो ७वीं कक्षा में पढ़ती थी। उसकी उम्र के दोगुने से भी बढ़े (३२ वर्ष) के एक व्यक्ति ने उसे शादी के लिए प्रपोज़ किया। लक्ष्मी ने उसे इन्कार कर दिया। लक्ष्मी ने बताया कि २२ अप्रैल २००५ की सुबह लगभग १० बजकर ४५ पर वो दिल्ली के भीड़-भाड़ वाले इलाके खान मार्केट में एक बुक स्टोर पर जा रही थी कि वो युवक अपने छोटे भाई की गर्लफ्रेंड के साथ आया और उसे धक्का दे दिया। धक्का लगते ही लक्ष्मी सड़क पर गिर गई और उस युवक ने उसके ऊपर तेजाब फेंक दिया। आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते हैं उस दर्द का जो शरीर पर तेजाब गिरने से होता है।

लक्ष्मी ने बताया कि भगवान का शुक्र रहा कि मैंने उसके हमले को भाँपते हुए अपनी आँखे बचा पाई और आज मैं आप लोगों को देख और समझ पा रही हूँ। उसने बताया कि पहले तो मुझे ठंडा सा लगा है फिर मेरा शरीर तेजी से जलने लगा था। कुछ ही सेकेण्ड में मेरे चेहरे और कान के हिस्सों से माँस जलकर जमीन पर गिरने लगा एसिड बहुत तेज था जिसकी वजह से चमड़ी के साथ-साथ मेरी हड्डियाँ भी गलनी शुरु हो गई थी।

लक्ष्मी ने बताया कि वो २ महीने से ज्यादा समय तक राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती रही। अस्पताल से निकलने के बाद घर आकर जब उन्होंने शीशा देखा तो उन्हें अंदाज़ हो गया कि उनकी जिन्दगी अब उजड़ चुकी है।

दोस्त

– अफनाज़ जुलैका

प्रथम बी.सी.ए.

प्यार से बना था रिश्ता हमारा,
तुम बनी थी मेरा सहारा।
मिलके तुम्हें मैं दोबारा,
रखूँगी नहीं यह रिश्ता अधूरा।

गतवर्ष के हिंदी संघ के सचिव

रीवा वियोला रोड्रिगस

मुहम्मद शहिम

OUR SPONSORS

LIBNY KARUNYA

MYRA WEAVER COLLECTIONS

PIZZALAND

OCEAN PEARL HOTEL, MANGALORE

VISMAYA

MELWIN CUTINA

SALDORE COLD STORAGE

DR. SYLVIA REGO

PETALS BOUTIQUE

SHOES IN

SHETTY HOTEL

ZAIKA FAMILY RESTAURANT

SAFARI

SPYKAR

HUB ICE-CREAM, DERALAKATTE

RINKU PANJABI FAMILY RESTAURANT

MYRA WEAVER

संघ की गतिविधियाँ

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलूरु

संत अलोसियस कालेज 'हिंदी संघ'

द्वारा आयोजित

'प्रेरणा' उत्सव की

हार्दिक शुभकामनाएं

कार्पोरेशन बैंक Corporation Bank

सार्वजनिक क्षेत्र का अग्रणी बैंक